श्री बाबूलालजी फणीश 'शास्त्री'

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिरी ऊन जिला खरगोन (म.प्र.) में सन् 1974 से श्री महावीर दिगम्बर जैन गुरुकुल में प्राचार्य पद पर अपनी सेवायें प्रदान करने वाले जैन जगत के मूर्धन्य विद्वान प्रतिष्ठाचार्य **पंडित श्री बाबूलालजी फणीश 'शास्त्री'** का 7 जनवरी 2014 का निधन हो गया। सरलता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति फणीशजी ने अपना संपूर्ण जीवन संस्कृति, समाज, संस्कार एवं देवशास्त्र गुरुओं की आराधना व जिनधर्म प्रभावना में समर्पित कर दिया। मूलत: ललितपुर जिले के डगराना ग्राम में 15 जुलाई 1928 को जन्में पंडितजी साहब समाज के अद्वितीय रत्न थे। अनेक चेतन एवं अचेतन कृतियों के सृजक पंडितजी साहित्य विशारद शास्त्री, साहित्यांलकार वाचस्पति, हिन्दी धर्मरत्न एम.ए. तक शिक्षित थे। अपनी विद्वता को पंडितजी ने अपने जीवन में उतारा और चारित्र के उच्चतम मार्ग पर चलकर दूसरों को अपनी वाणी के माध्यम से चलने के लिए प्रेरित किया। वे प्रतिमाधारी होकर 12 वर्ष की यम संलेखना धारी गृहस्थ जीवन के संत थे। पंडितजी जहां भी जाते क्षेत्र की रसीद बुक हमेशा उनके साथ रहती थी। आज उनकी तरह दान लेने की कला में महारथ रखने वाले व्यक्तित्व लगभग समाप्त हो गए है। उन्होंने जो किया स्वयं के लिए नहीं परमार्थ के लिए किया। उनका यह आचरण स्तुतनीय, वंदनीय एवं अनुकरणीय है।

गुरुकुल के माध्यम से सेवाएँ – अपने बच्चे तो सभी जीव पाल लेते है लेकिन दूसरों के निर्धन, परेशान, अनाथ बच्चों को स्नेह, संस्कार प्रदान करने वाले व्यक्ति बिरले ही होते है। जिन्होंने 1960 से 1974 तक श्री वर्णी दि. जैन गुरुकुल पिसनहारी की मड़िया जबलपुर एवं विगत 40 वर्षो से महावीर दि. जैन गुरुकुल के प्राचार्य पद पर अपनी सेवाएँ देकर सैकड़ो छात्रों को लौकिक शिक्षा के साथ संस्कार युक्त धार्मिक शिक्षा प्रदान की, आज ये छात्र देश विदेश में उच्च पदों पर अपनी सेवाएँ दे रहे है। वे व्यक्ति नहीं एक संस्था थे।

साहित्य क्षेत्र में योगदान – पं. फणीशजी का काव्य संग्रह 'शांतिदूत', आत्म साधना के दशलक्षण धर्म, जैनम् जयति शासनम्' सहित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। वे आशु कवि थे, तुरंत हर मौके पर कविता बनाकर प्रस्तुत करना उनका शौक था। अनेक क्षेत्रों की पूजाएं भी उन्होंने लिखी। आकाशवाणी से भी कविताओं का प्रसारण हुआ विगत चार दशकों से देशभर के श्रेष्ठी, संतों के जीवन पर आधारित अभिनंदन ग्रंथों में उनकी कविताएँ अवश्य ही प्रकाशित हुई है। संस्कृत सुधा पत्रिका का संपादन कार्य भी आपने सुचारु रुप से किया।

कुशल प्रवचनकार एवं प्रतिष्ठाचार्य – मालवा–निमाड़ सहित देश में होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा, सिद्धचक्र मंडल विधान, इन्द्रध्वज मंडल विधान आदि में पंडितजी साहब की विशेष ख्याति थी। संस्कृति एवं प्राकृत भाषा में जैनाआगम के श्लोको को सरल भाषा में रुपांतरण करना आपकी प्रवचन शैली का अंग था। देश के शीर्षस्थ विद्वान संहित सूरि पंडित नाथुलालजी शास्त्री एवं गोलालारीय समाज के कोहिनूर रत्न पं. बंशीधरजी शास्त्री आपकी शिक्षा एवं दीक्षा के गुरु थे। अपने गुरुओं की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से अर्जित ज्ञान को फणीशजी ने समाज में लुटाया एवं अनेकों चेतन एवं अचेतन कृतियों का सृजन कर जिन धर्म प्रभावना की।

दान प्रेरणा की प्रतिमूर्ति – मर जाऊँ मांगू नही, अपने तन के काज । परमारथ के कारणें, मुझे न आवे लाज।। यह दो लाईनें आपने कई जगह लिखी देखी होगी, पं. फणीशजी ने जीवन भर इन लाइनों का पालन किया और पावागिरी ऊन की अनेक योजनाओं में दान लिया व स्वयं भी दिया। महावीर दि. जैन गुरुकुल भवन निर्माण, वाचनालय भवन निर्माण, भगवान कुन्थुनाथ अरहनाथ प्रतिमा जीर्णोद्धार, भगवान महावीर मंदिर सौंदर्यीकरण, कमरे निर्माण सहित ऊन की अनेक योजनाओं में दान लेने में उन्होंने प्राणपण से कार्य किया। क्षेत्र के विकास में उनका योगदान अवर्णनीय व अविस्मरणीय है।

भारतवर्षीय दि. जैन महासभा, महावीर ट्रस्ट एवं सामाजिक ससंद इन्दौर, भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, अ.भा. दि. जैन शास्त्री परिषद, श्री गोलालारीय दि. जैन समाज, दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, प्रतिष्ठाचार्य पं. ब्र. गुलाबचंद पुष्प, बा.ब्र. जय निशांत एवं पं. सनत विनोद जैन रजवांसा एवं अन्य संस्थाओं ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की । आचार्य श्री धर्मसेनजी महाराज ससंघ के सानिध्य में 19 जनवरी को शांति विधान एवं विनयांजलि सभा में संपूर्ण निमाड एवं मालवा के समाजजनों ने अपनी भावनायें व्यक्त कर कहा कि विद्वान समाज की धरोहर है उनके बिना समाज का उत्थान संभव नहीं। व्यक्ति की पहचान उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से होती है। सरलता से जीवन जीने वाले पंडितजी ने मृत्यु का वरण भी सरलता से किया।

श्री गुलाबचंद तामोट

श्री गुलाबचंदजी तामोट, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं पूर्व मंत्री म.प्र. शासन, जैन समाज के ऐसे बहुमूल्य रत्न है जिन्होंने न केवल गोलालारीय समाज वरन् जैन समाज का गौरव बढ़ाया है अपितु पूरे देश में अपने कार्यो से भी अमिट छाप छोड़ी है। निर्भीक, ईमानदार, कर्मठ एवं अपने सिद्धांतों पर अडिग रहने वाले गुलाबचंद तामोट युवावस्था से ही देश प्रेम से ओत प्रोत होकर स्वाधीनता संग्राम विशेष रुप से भोपाल राज्य के विलीनीकरण आंदोलन में अत्यंत सक्रिय रहते हुये आंदोलनरत रहे एवं देश की आजादी के लिये उन्हें जेल भी जाना पड़ा। भोपाल राज्य का विलीनीकरण आंदोलन का इतिहास श्री तामोट के योगदान के बगैर अधूरा ही माना जायेगा। देश की स्वतंत्रता के बाद वैचारिक रुप से समाजवादी सिद्धांतों से प्रेरित होने के कारण श्री तामोट ने न केवल समाजवादी आंदोलन में अपना सहयोग प्रदान किया।

डॉ राम मनोहर लोहिया के निकटस्थ साथी के रुप में श्री तामोट समाजवादी आंदोलन के रुप में एक ऐसे नेता के रुप में उभरे जिन्होंने न केवल मध्यप्रदेश अपितु डा. राममनोहर लोहिया के निर्देश पर अन्य प्रदेशों में भी समाजवादी आंदोलन का नेतृत्व किया। श्री तामोट सन् 1952 में म.प्र. की प्रथम विधानसभा में विधायक के रुप में चुनकर आये और अपनी निर्भिक छवि, भाषाणों के कारण पूरे प्रदेश एवं देश में अपना एक स्थान बनाया। उनकी सक्रियता से न केवल शासकीय पक्ष डरा हुआ रहता था अपितु सचेत रखने का विपक्ष के नेता के रुप में जो विधायिका का कार्य है वह भी सुचारु रुप से कार्य करने हेतु मजबूर होना पड़ता था।

विधान सभा में विपक्ष के नेता के रुप में श्री तामोट को प्रदेश शासन के विरुद्ध कई वार अविश्वास प्रस्ताव लाने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। 1966 के पश्चात तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री द्वारकाप्रसादजी मिश्र ने उनकी योग्यता को देखते हुए कांग्रेस में आने हेतु प्रेरित किया, जिससे उनकी कार्यक्षमता का योगदान प्रदेश के विकास में सहायक हो सके। 1967 में श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र के मंत्रिमंडल में वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रुप में प्रदेश के वनो के सकल राष्ट्रीयकरण का गौरव भी श्री तामोटजी को प्राप्त है। श्री प्रकाशचंदजी सेठी एवं श्री श्यामचरणजी शुक्ला के मुख्यमंत्री काल में श्री तामोट को अनेक विभाग में मंत्री के रुप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ और प्रदेश में अनेक सफल योजनाओं को क्रियांवित करने का गौरव प्राप्त हुआ। इन्दौर के नर्मदा जल योजना को समय सीमा से पूर्व कराना, लोक निर्माण विभाग, पंचायत एवं अन्य विभागों के कार्यकाल की मिसाल आज भी लोगों द्वारा दी जाती है।

श्री अर्जुन सिंह के मुख्यमंत्री अवधि में श्री तामोट को म.प्र. राज्य भंडार गृह निगम का अध्यक्ष बनाया गया, अपनी कार्यअवधि में श्री तामोट द्वारा पूरे प्रदेश में नये भंडार गृह बनवाकर निगम को एक लाभ देने वाले उपक्रम में परिवर्तित किया।

कर्त्तव्यनिष्ठ, ईमानदारी एवं अपनी बात अपने ही अंदाज में करते थे। भाषण के लिये श्री तामोट सभी के प्रेरणा स्रोत बने रहे। जैन समाज के लिये भी समय समय पर यथासंभव सहयोग बिना किसी प्रचार प्रसार के लिये करते रहे। समाज के निर्धन परिवारों, विशेष रुप से कन्याओं के शिक्षा, स्वास्थ्य के लिये उन्होंने अपनी ओर से अपने स्व. पिता श्री मूलचंदजी एवं माता श्रीमती गुनाबाई की स्मृति में एक ट्रस्ट 'श्री मूलचंद गुनाबाई जैन तामोट, लोक न्यास' का गठन किया जिसके द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 2.50 लाख रुपये का सहयोग सामाजिक हित के विभिन्न कार्यो में किया जाता है। जैन समाज के सपूत, कभी न विचलित होने वाले देश एवं प्रदेश के गौरव श्री गुलाबचंदजी तामोट दिनांक 21 जनवरी 2014 को 91 वर्ष की आयु में हमारे बीच नहीं रहे। पूरा जैन समाज अपनी ओर से उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करता है। श्री गोलालारीय समाज के मंदिर व सांस्कृतिक भवन 64, न्यू देवास रोड का शिलान्यास आपके द्वारा ही दि. 2 मई 1976 को करा गया था, जो हमारे लिए गौरव का क्षण था। गोलालारीय समाज इन्दौर एवं गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

विनम्र श्रद्धांजलि

सवाई सिंघई श्री दीपचन्द्र जैन (पहाड़गाँव वाले) का स्वर्गवास दिनांक 24 नवम्बर 2013 को छतरपुर में हो गया। आपने अपने ग्राम बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक नगरी पहाड़गाँव स्थित जैन मंदिर का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार व विस्तार कराकर, वर्ष 2000 में सिद्धचक्र महामंडल विधान व रथयात्रा महोत्सव सम्पन्न कराया था। यूं तो आप जीवन भर आत्म साधना व धर्मध्यान करते रहे हैं तथापि अल्प बीमारी पश्चात, अंतिम समय में घर पर ही णमोकार–मंत्र का उच्चारण करते हुये शांत–वातावरण में देहावसान हुआ। आपकी धर्म के प्रति विशेष रूचि थी। आपकी स्मृति में आपके पुत्रों ने स्थानीय मंदिरों के लिए दान की घोषणा की। छतरपुर जैन समाज व गोलालारीय दर्शन परिवार विनम्र श्रृद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट – यदि आप परिवार के सदस्य की पुण्य स्मृति में शोक संदेश प्रकाशित करवाना चाहते है तो प्रधान संपादक से संपर्क करे।